PAGE NO.:
DATE: / /

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सन्दर्भ में कालिदास की नाट्यकला

महाकवि कालिदास का महत्व केवल महाकाव्यकार एवं गीति काव्यकार के रूप में ही नहीं, अपितु एक नाटककार के रूप में भी है। वस्तुतः कालिदास की कीर्ति का आधार उनका विश्वप्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' ही है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक विलियम जोन्स ने 'The last thing' की भूमिका में कालिदास को भारत का शेक्सपीयर समुद्घोषित किया तथा उनकी शकुन्तला के कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से भूरि-भूरि प्रशंसा की।

नाटककार के रूप में मूल्यांकन करने के लिए हमारे पास कालिदास विरचित तीन नाटक हैं — 1) मालविकाग्निमित्रम् 2) विक्रमोर्वशीयम् 3) अभिज्ञानशाकुन्तलम्। जिनमें से अभिज्ञान-शाकुन्तलम् अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ नाटक है। इसके सात अंकों में राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का प्रणय, वियोग तथा पुनर्मिलन अंकित है। हस्तिनापुर का राजा दुष्यन्त मृगया खेलते हुए कण्व मुनि के आश्रम में पहुँचता है। वहाँ कण्व द्वारा पोषित, मेनका और विश्वामित्र की पुत्री शकुन्तला से उसका वार्तालाप होता है और दोनों में घनिष्ठ प्रेम हो जाता है। राजा का मन शिकार से विरक्त हो जाता है और वह

आश्रम में रहता है। इस नाटक का कथानक महाभारत के आधार पर निर्मित है। वहाँ यह कथा नितान्त अरोचक एवं आदर्श विहीन है, लेकिन कालिदास ने अपनी कल्पना शक्ति से उसमें पर्याप्त परिवर्तन कर दिया है और आवश्यकतानुसार नवीन प्रसंगों की उद्भावना की है।

कालिदास का प्रथम नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' उनकी नाट्यकला का अंकुर है, द्वितीय नाटक 'विक्रमोर्वशीयम्' में वह पुष्पित हुआ है और शाकुन्तलम् के रूप में वह समस्त नाट्यकला के मधुरतम फल के रूप में परिणत हुई है। कालिदास के सभी नाटक सुखान्त होते हैं और इनका प्रतिपाद्य श्रृंगार है। ~~कवि~~ कालिदास की नाट्यकला का प्रमुख लक्ष्य चरित्र-चित्रण होकर रस-व्यंजना है। 'शाकुन्तलम्' कालिदास की नाट्यकला का श्रेष्ठतम निदर्शन है — यह भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान एक स्वर से स्वीकारते हैं। शाकुन्तलम् की कथावस्तु में विभिन्न घटनाओं की योजना इस प्रकार की गई कि कथा विकास में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती। छोटी से छोटी घटना का भी उसमें महत्त्व है। कालिदास ने महाभारतीय कथावस्तु में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन कर जो रूप इस नाटक में दिया है, वह प्रशंसनीय है। न केवल कथा-विन्यास अपितु चरित्र-चित्रण, संवाद-योजना, भाषा-शैली, अलंकार-योजना, रस-योजना, प्रकृति-चित्रण सभी दृष्टियों से यह सर्वश्रेष्ठ नाटक है।

PAGE NO. :
DATE : / /

काव्यात्मकता — कालिदास एक कुशल नाटककार होने के साथ-साथ एक सफल महाकवि भी हैं। इसीलिए इनके नाटकों में नाटकीयता अपने काव्यमय वातावरण के साथ प्रस्फुटित हुई है। नाटकों के दृश्यों या भावनाओं का साहित्यिक आनन्द तथा मनोभिराम चित्रण सहृदयों के मन में अमर हो जाता है, जैसे कि शकुन्तला का यह सौन्दर्य —

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं मलिनमपि
हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी किमिव
हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥

भाषागत चारुता — महाकवि कालिदास की भाषा सरल, सुबोध, सरस एवं परिमार्जित है। उन्होंने प्रसाद गुण गुम्फित एवं प्रवाहपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने मुहावरेदार मधुर भाषा का प्रयोग करके अपने काव्य में सजीवता का ~~प्रयोग~~ संचार किया है। उनकी भाषा में समासगत बहुलता भी नहीं है। भाषा में सर्वत्र पात्रानुकूल प्रयोग मिलता है। सीमित शब्दों में सशक्त शब्दों का प्रयोग इनकी भाषा की विशेषता है। महर्षि, विदूषक, राजा या सेवकगण अपने चरित्र या स्वभाव के अनुकूल ही भाषा का प्रयोग करते हैं।

महाकवि कालिदास रसमयी शैली के

आचार्य हैं। उनकी शैली में ललित पद विन्यास एवं सुन्दर भावों की व्यंजना विद्यमान है। सुकुमार एवं कोमल भावों की अभिव्यञ्जना के कारण ही उन्हें कविता कामिनी का विलास कहा गया है। संसार का विस्तृत एवं गहन अनुभव होने के कारण मानव हृदय के मार्मिक भावों को समझने और प्रकट करने की उनमें पूर्ण क्षमता है। उनकी शैली में रस निर्भरता है।

<u>अलंकार योजना</u> — इस नाटक में समुचित अलंकारों की योजना के द्वारा भाषा में अधिक रमणीयता एवं रोचकता आ गई है। उपमा तो कालिदास की महती विशेषता है। रूपक, उत्प्रेक्षा तथा अर्थान्तरन्यास आदि की भी शाकुन्तलम् में कोई कमी नहीं है। प्रसंग व वातावरण के अनुकूल भाषा से स्वाभाविकता में वृद्धि हुई है। कालिदास ने नाटक के नियमानुसार ही उच्चवर्ग या शिष्ट पात्रों की भाषा संस्कृत तथा अन्य पात्रों की प्राकृत रखी है। प्रसंग के अनुसार सुकुमार कोमलकान्त पदावली अपना विशेष महत्व रखती है।

<u>पात्र एवं चरित्र-चित्रण</u> — अभिज्ञानशाकुन्तलम् में पात्रों का चयन और उनका चरित्र-चित्रण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कालिदास का चरित्र आदर्शोन्मुख होते हुए भी सर्वथा स्वाभाविक एवं सजीव है। शाकुन्तल के पात्र इसी लोक के होते हुए भी स्वर्ग आदि स्थानों में अबाध गति

PAGE NO.:
DATE: / /

से विचरण करते हैं। नाटक के पात्र अपने अनुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं। कवि ने पुरुष और नारी दोनों का आदर्श चरित्र-चित्रण किया है। पुरुष पात्रों में दुष्यन्त, कण्व, दुर्वासा, विदूषक, मारीच, शार्ङ्गरव और शारद्वत प्रमुख हैं तथा नारी पात्रों में शकुन्तला, अनसूया, प्रियम्वदा और गौतमी प्रमुख हैं।

शिष्ट विनोद — विनोद प्रायः असम्बद्ध या अनपेक्षित कथनों, कृत्रिम व मूर्खतापूर्ण प्रसंगों से उत्पन्न होता है। यह स्वभावगत, प्रसंगगत या शब्दगत होता है। कालिदास के सभी नाटकों में विनोद का पात्र विदूषक है, जो राजा तथा दर्शकों का मनोरंजन करता है।

शाकुन्तलम् में भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण तीन विशेषताओं — त्याग, तपस्या और तपोवन का अच्छा चित्रण किया गया है। त्याग की गणना मानवीय गुणों के अन्तर्गत होती है। तपस्या ऋषि-मुनियों से सम्बन्धित है और तपोवन का वर्णन प्रकृति के स्वरूप को प्रदर्शित करता है। कालिदास की दृष्टि में मानवीय सौन्दर्य का मापदण्ड प्रकृति ही है।

अतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर ~~यह~~ कहा जा सकता है कि सरलता तथा माधुर्य से पूर्ण भाषा, अलंकारों की स्वाभाविक योजना, मधुर भावों का चित्रण, रस-व्यंजना,

काव्य में सरस मधुर सूक्तियों का उपयुक्त समावेश, चरित्र-चित्रण की कुशलता एवं नाट्यकला में निपुणता आदि सभी दृष्टियों से कालिदास एक सफल नाटककार हैं। संस्कृत साहित्य में उनका अग्रगण्य स्थान है।